अच्छा लगता है हैलो, नमस्कार और श्रीमान्

सूबे के सरकारी महकमे में टेलीफोन रिसीव करने का बदला अंदाज

अतुल उपाध्याय

पटना

पूरा सिस्टम जब हैलो, नमस्कार और श्रीमान् बोलने लगे तो अच्छा लगता है। अभिवादन की भाषा में बाऽअदब कर्णप्रिय संगीत की तरह। यह हमारी संस्कृति का हिस्सा भी रहा है। जिसे बिहार ने और खासकर सरकारी तंत्र ने स्वीकार करना शुरू कर दिया है। अभिवादन की इस परंपरा को कॉरपोरेट घरानों ने हमारी ही संस्कृति से अपनाया और इसी के बूते वे बुलंदियों पर भी हैं। लेकिन सरकारी महकमों में...ए काऽ बात है जी, दुत् और डांटने के अंदाज में क्या है? पूछने की परंपरा ही उसे हाशिए पर ले जाती रही। बिहार में अब शायद ऐसा नहीं रहा। बदली कार्यसंस्कृति में आतिथ्य के संस्कार ने भी अपनी वापसी की है। कुछ लोग कहेंगे ये क्या बात हुई। लेकिन दफ्तरों में, थानों में यही छोटी-छोटी बातें अब कार्यसंस्कृति का रूप ले रही हैं। जिसका उदाहरण देकर आप दूसरों को भी इस संस्कृति से जुड़ने को कह सकते हैं।

गांव में बैठा कोई शख्स सरकार के मंत्रियों और बड़े हाकिमों के दफ्तरों में फोन करने से नहीं हिचकता। इस सच्चाई को परखने के लिए गुरुवार को 'बेनाम' होकर हमने भी सरकार के कुछ मंत्रियों व बड़े अधिकारियों (आईएएस- आईपीएस) के दफ्तरों से लेकर थानों तक में फोन करना शुरू किया...

पहला फोन (बेसिक नंबर पर) सामान्य प्रशासन विभाग के प्रधान सचिव दीपक कुमार के दफ्तर के नंबर पर-घंटी बजी और संभवतः पहली ही रिंग में वहां बैठे सरकारी कर्मचारी ने रिसीव किया-हैलो..सर सामान्य प्रशासन विभाग के प्रधान सचिव का कार्यालय।

दूसरा नंबर पंचायती राज विभाग के प्रधान सचिव मनोज श्रीवास्तव के कार्यालय का था-जी नमस्कार, प्रधान सचिव पंचायती राज के कार्यालय से बोल रहा हूं।

तीसरा कॉल स्वास्थ्य मंत्री अश्विनी कुमार चौबे और फिर चौथा नंबर विभाग के प्रधान सचिव अमरजीत सिन्हा के कार्यालय का था-वहां से भी इसी लहजे में प्रतिक्रिया व्यक्त की गई। फिर मुख्य सचिव अनुप मुखर्जी और गृह विभाग के प्रधान सचिव आमिर सुबहानी के दफ्तर के टेलीफोन की घंटियां बजीं और प्रतिक्रिया वैसी ही आई जिसकी अपेक्षा में यह तफ्तीश थी। ऊर्जा मंत्री विजेन्द्र प्रसाद यादव, ग्रामीण विकास मंत्री नीतीश मिश्र, राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री रमई राम, पथ निर्माण मंत्री नंदकिशोर यादव के कार्यालयों सहित कई और नंबरों से आया जवाब सुकून देने वाला था। पुलिस महकमे के तेवर को परखने का पहला पायदान डीजीपी नीलमणि का कार्यालय सबसे बेहतर लगा। उनके सेल में बैठे कर्मचारी ने फोन उठाया। इधर से बिना हैलो बोले प्रतिक्रिया आई-जी श्रीमान, डीजीपी महोदय के कार्यालय से बोल रहा हूं। अब बारी जमीनी हकीकत को परखने की थी। जहां से लोगों का सीधा सरोकार होता है। कदमकुआं थाने में फोन करने पर एक महिला पुलिसकर्मी ने-जी श्रीमान् कदमकुआं थाना है। फिर कोतवाली, कंकड़बाग, पाटलिपुत्र और सचिवालय थाने में भी फोन उसी मुस्तैदी और सम्मानजनक तरीके के साथ रिसीव किए गए। पड़ताल सफल रही। सरकारी तंत्र में पनप रही यह कार्यसंस्कृति शायद बदलते बिहार का संकेत भी है।